पाठ 5. मात्राओं का ज्ञान

इस पाठ के माध्यम से बच्चों को मात्राओं का ज्ञान प्राप्त होगा। आ-औ तथा ऋ की मात्रा का अभ्यास भी होगा। मात्रा से बने शब्दों का ज्ञान दें। बच्चों को चित्र पहचानकर शब्द लिखने का अभ्यास होगा। उन्हें शब्दों को जोड़कर वाक्य पढ़ने का अभ्यास भी कराएँ।

आ की मात्रा (ा)

बच्चों को बताएँ कि प्रत्येक स्वर की मात्रा होती है। 'अ' स्वर की मात्रा नहीं होती। प्रत्येक व्यंजन में स्वर मिला होता है, इसकी जानकारी दें। जैसे – क् + अ = क। जिस मात्रा का ज्ञान करवाएँ, उस मात्रा को व्यंजन के साथ लगाकर ही उस वर्ण का उच्चारण करें, जैसे – का, जा, मा आदि।

श्यामपट्ट पर बच्चों को मात्राएँ अलग करके दिखाएँ। अभ्यास करवाते समय प्रत्येक मात्रा को सीखे हुए अनेक व्यंजनों के साथ लगाकर उच्चारण किया जाए। ऐसा करने से बच्चों को मात्राओं का ज्ञान अधिक सरलता और कम परिश्रम से दिया जा सकता है।

मात्रा का ज्ञान करवाने के लिए ऐसे शब्दों का चयन करें जिन्हें हम चित्रों के माध्यम से बच्चों को दिखा सकें 'आ' की मात्रा के लिए कान, गाजर, छाता, ताला, तबला, हाथ जैसे चित्रों के नीचे शब्द लिखकर दिखाएँ।

'आ' की मात्रा का प्रयोग और उसके उच्चारण का पर्याप्त अभ्यास करवाएँ। अ और आ के उच्चारण में अंतर स्पष्ट करने के लिए कल - काला, बल - बाला, नल - नाला, जल - जाला जैसे शब्दों का उच्चारण करवाएँ।

पाठ को कक्षा में शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ें और बच्चों से भी पढ़वाएँ। बच्चों को पाठ समझ में आया या नहीं, यह जानने के लिए पाठ में दिए गए अभ्यास करवाएँ।

मात्रा को लिखकर समझने के लिए खाली स्थान भरो, 'आ' की मात्रा लगाकर शब्द बनाओ तथा सही स्थान पर 'आ' की मात्रा लगाओ जैसे अभ्यास करवाएँ।

इ की मात्रा (ि)

बच्चों को 'इ' की मात्रा (ि) का सही उच्चारण समझाएँ। शब्दों का उच्चारण करते समय 'इ' की मात्रा (ि) वाले वर्ण की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। 'इ' की मात्रा से बने शब्दों का पर्याप्त अभ्यास करवाएँ। चित्र पहचानकर बच्चों से उनके नाम बताने को कहें, जैसे – किताब, टिकट, नारियल।

पाठ में दिए सभी शब्दों को बार-बार दोहराएँ तथा कॉपी में लिखवाएँ। दिए गए शब्दों में आ की मात्रा (ा) का भी प्रयोग हुआ है। आ की मात्रा (ा) को दोहराने का मुख्य उद्देश्य बच्चों के ज्ञान को पक्का करना है। पाठ पर आधारित दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखवाएँ।

बच्चों की स्मरणशक्ति को आँकें। 'इ' की मात्रा वाले शब्दों को बार-बार दोहराएँ। दिए गए चित्रों को पहचानकर 'इ' की मात्रा लगवाकर शब्दों को पूरा करवाएँ। इस तरह के अभ्यास करने से बच्चे 'इ' की मात्रा वाले शब्दों से भली-भाँति परिचित हो जाएँगे।

पाठ से संबंधित प्रश्न बच्चों से करें। बच्चे कहाँ गए? उत्तर होगा 'पिकनिक'। चिड़िया क्या

लाई? उत्तर होगा 'तिनका'। बच्चों से प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्य में बोलने को कहें।
कुछ शब्दों का श्रुतलेख करवाएँ। सही शब्द श्यामपट्ट पर लिखें। सभी कॉपियों में वर्तनी की अशुद्धियों को दूर करें। बच्चों को केवल तीन बार भूल सुधारकर लिखने को कहें।

ई की मात्रा (ी)

बच्चों को 'ई' की मात्रा (ी) का सही उच्चारण समझाएँ। 'ई' की मात्रा के शब्दों को पढ़ाते व उच्चारण करते समय शब्दों में आई 'ई' की मात्रा (ी) पर विशेष बल दें। बच्चों को यह स्पष्ट करें कि 'ई' की मात्रा वर्ण के दाहिनी ओर लगती है। इसके बाद 'ई' की मात्रा से बने शब्दों का पर्याप्त अभ्यास करवाएँ। चित्र पहचानकर बच्चों से उनके नाम बताने को कहें, जैसे – महारानी, बकरी, मछली आदि।
पाठ में दिए सभी शब्दों को कक्षा में बार-बार दोहराएँ तथा कॉपी में लिखवाएँ। दिए गए शब्दों में आ (ा) तथा इ (ि) की मात्राओं का भी प्रयोग हुआ है क्योंकि बच्चे पहले इन मात्राओं का अभ्यास कर चुके हैं। इन मात्राओं को दोहराने से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ेगा।
पाठ का स्वयं कक्षा में आदर्श वाचन करें तथा बच्चों से भी करवाएँ। पाठ में आए 'ई' की मात्रा वाले शब्दों पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें।
पाठ से संबंधित छोटे-छोटे प्रश्न करें। इससे बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होगा।
पाठ से 'ई' की मात्रा वाले शब्दों को छाँटकर श्यामपट्ट पर लिखें। बच्चों को इन्हीं शब्दों को अपनी कॉपी में लिखने को कहें। पाठ से संबंधित चित्रों पर भी बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। दीपावली के त्योहार से जुड़े प्रश्न करें। त्योहारों से संबंधित प्रश्नों से बच्चों का सामान्य ज्ञान आँकें व उसे बढ़ाने में उनकी सहायता करें। इस आधार पर बच्चों के पठन-कौशल को आँकें। आवश्यकतानुसार बच्चों की सहायता करें। चित्रों की पहचान करवाएँ।
'ई' की मात्रा लगे शब्दों को पूरा करवाएँ। 'इ' और 'ई' की मात्रा के अंतर को दिए गए उदाहरणों द्वारा समझाएँ। मात्रा के आधार पर शब्दों के अर्थ में आने वाले अंतर को स्पष्ट करें। गलत मात्रा के प्रयोग से अर्थ के अनर्थ होने की बात समझाएँ। अंगूर के गुच्छे में लिखे शब्दों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़वाएँ।
उन शब्दों पर गोला लगवाएँ जिनमें दो बार 'ई' की मात्रा का प्रयोग हुआ है। इन सभी शब्दों का कॉपी में सुलेख करवाएँ। इससे बच्चों में आत्मविश्वास जागेगा। इस तरह की गतिविधियों से शब्दों को ढूँढ़ने व जानने के प्रति बच्चों में रुचि पैदा होगी।
सीखे गए 'ई' की मात्रा के शब्दों का श्रुतलेख करवाएँ। सही शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखें। बच्चों की कॉपियों को स्वयं जाँचें। सुधार कार्य अवश्य करवाएँ।

उ की मात्रा (ु)

सबसे पहले मौखिक रूप में बच्चों को 'उ' (ु) की मात्रा से परिचित करवाएँ। बच्चे 'उ' वर्ण से परिचित हैं। प्रत्येक बच्चे से 'उ' (ु) की मात्रा से बना एक-एक शब्द बताने को कहें। कुछ शब्द उदाहरणस्वरूप स्वयं भी कक्षा में बताएँ। जैसे - उधर, उजला, उजाला, उगा आदि। अब श्यामपट्ट पर 'उ' की मात्रा के कुछ शब्द लिखें। बच्चों को यह स्पष्ट करें कि 'उ' की मात्रा शब्द के दाहिनी ओर से प्रारंभ होकर बाईं ओर ऊपर की तरफ़ जाती है। 'र'

पर 'उ' की मात्रा इसके नीचे नहीं, बीच में लगती है।
पुस्तक में दिए दो, तीन व चार वर्णों के शब्दों को शुद्ध उच्चारणसहित कक्षा में पढ़ें तथा श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों से भी बार-बार पढ़वाएँ। बच्चों से इन्हीं शब्दों को कॉपी में भी लिखवाएँ। बोलकर लिखने का अभ्यास अवश्य करवाएँ। बोलने, सुनने व लिखने से शब्द बच्चों के मानस-पटल पर अंकित हो जाता है।
'उ' की मात्रा के अभ्यासस्वरूप इस पाठ को कक्षा में स्वयं भी पढ़ें तथा बच्चों से भी पढ़वाएँ। 'उ' की मात्रा के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। 'उ' की मात्रा वाले सभी शब्दों को बार-बार दोहराएँ।
बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए पाठ से संबंधित प्रश्न करें। पाठ में उन मात्राओं वाले शब्दों का भी समावेश किया गया है, जिन्हें बच्चे पहले सीख चुके हैं। उन शब्दों को पढ़ते समय पिछली मात्राओं की ओर भी बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। वर्णों को धीरे-धीरे व अलग-अलग कर पढ़ने से बच्चों का ध्यान प्रत्येक वर्ण व मात्रा पर जाएगा, जैसे–'सु रा ही'।

ऊ की मात्रा (ू)

सबसे पहले मौखिक रूप में बच्चों का 'ऊ' से परिचय करवाएँ। ऊ से शुरू होने वाले शब्द 'ऊपर', 'ऊन' का कक्षा में शुद्ध उच्चारण करें। बच्चों को ऊ की मात्रा (ू) वाले शब्दों का उच्चारण करवाते समय मात्रा पर विशेष ध्यान दें। उ (ु) तथा ऊ (ू) की मात्रा का अंतर उच्चारण के द्वारा स्पष्ट करें। र पर ऊ की मात्रा (रू) के स्वरूप को स्पष्ट रूप से समझाएँ। बच्चों को समझाएँ कि 'ऊ' की मात्रा (ू) वर्ण के नीचे लगती है और दाईं ओर झुकती है।
पुस्तक में दिए दो, तीन व चार वर्णों के शब्दों को शुद्ध उच्चारणसहित कक्षा में पढ़ें तथा श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों से भी बार-बार उच्चारित करवाएँ। बोलने, सुनने व लिखने का अभ्यास करने से बच्चे मात्रा से भली-भाँति परिचित हो जाएँगे। 'ऊ' की मात्रा के अभ्यासस्वरूप इस पाठ को कक्षा में स्वयं भी पढ़ें तथा बच्चों से भी पढ़वाएँ। 'ऊ' की मात्रा के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। 'ऊ' की मात्रा वाले सभी शब्दों को बार-बार दोहराएँ।
बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए पाठ से संबंधित प्रश्न करें। पाठ में उन मात्राओं वाले शब्दों का भी समावेश हुआ है, जिन्हें बच्चे पहले सीख चुके हैं। पढ़ते समय पिछली मात्राओं की ओर भी बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। पाठ में दिए चित्रों पर भी बच्चों का ध्यान दिलवाएँ। चित्र बच्चों को आकर्षित करते हैं।

ए की मात्रा (े)

बच्चे 'ए' स्वर से परिचित हैं। 'ए' स्वर के प्रयोग वाले शब्दों को कक्षा में पढ़वाएँ। जैसे – एक, एड़ी, खाए, जाए, लाए।
'ए' के उच्चारण से बच्चों को परिचित करवाएँ। ए (े) की मात्रा वाले शब्दों का उच्चारण करवाते समय मात्रा पर विशेष ध्यान दें। ए (े) की मात्रा किस प्रकार और किस स्थान पर लगती है, यह बच्चों को अवश्य बताएँ। बच्चों से मौखिक रूप में 'ए' की मात्रा वाले शब्द पूछें। चित्रों के साथ दिए शब्दों को कक्षा में बार-बार दोहराएँ। दिए गए अन्य शब्दों का शुद्ध उच्चारण सहित कक्षा में वाचन करें। इन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखें तथा बच्चों से कॉपी

में लिखवाएँ। बोलकर लिखने से बच्चे शब्दों से जल्दी परिचित होंगे।
पाठ में दिए गए शब्दों के अलावा बच्चों के स्तर के अन्य शब्दों से बच्चों का परिचय करवाएँ। पाठ का कक्षा में आदर्श वाचन स्वयं करें व बच्चों से भी करवाएँ। 'ए' की मात्रा वाले शब्दों के उच्चारण पर विशेष बल दें। उन शब्दों को बार-बार दोहराएँ।
बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए पाठ से संबंधित प्रश्न करें। 'ए' की मात्रा वाले शब्दों का चित्र सहित चार्ट बनाकर कक्षा में बच्चों को दिखाएँ। रेलगाड़ी का खेल खिलाएँ। खेल-ही-खेल में 'ए' की मात्रा के शब्दों का उच्चारण बच्चों से करवाएँ।

ऐ की मात्रा (ै)

कक्षा में 'ऐनक', 'ऐरावत' शब्दों को बोलकर 'ऐ' के उच्चारण को बच्चों के सामने स्पष्ट करें। चित्रों के साथ दिए गए शब्दों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ें। ऐ की मात्रा (ै) वाले इन शब्दों का उच्चारण करते समय मात्रा पर विशेष ध्यान दें। 'ए' और 'ऐ' मात्रा का अंतर उच्चारण के द्वारा स्पष्ट करें। दोनों मात्राओं के अंतर को स्पष्ट करने के लिए पीछे दिए गए अभ्यास को दोहराएँ। सेर और सैर, मेल और मैल जैसे शब्दों का शुद्ध उच्चारण व अर्थ कक्षा में स्पष्ट करें।
दिए गए शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर कॉपी में लिखवाएँ। 'ऐ' की मात्रा के अभ्यासस्वरूप इस पाठ को कक्षा में स्वयं भी पढ़ें तथा बच्चों से भी पढ़वाएँ। 'ऐ' की मात्रा वाले शब्दों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। 'ऐ' की मात्रा वाले सभी शब्दों को बार-बार दोहराएँ।
बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए पाठ से संबंधित प्रश्न करें। पाठ में आए नए शब्दों से बच्चों को परिचित कराएँ।

ओ की मात्रा (ो)

'ओ' की पहचान बच्चों को चित्र व उच्चारण के द्वारा करवाएँ। ओखली, ओस, ओला, ओढ़नी शब्दों का परिचय चित्र के द्वारा दें। इन्हीं से संबंधित प्रश्न भी करें। जैसे – ओखली में हम क्या करते हैं? ओस कहाँ दिखाई देती है? ओला किससे बनता है? ओढ़नी कौन ओढ़ता है? आदि।
'पराग' में दिए चित्र सहित शब्दों का परिचय बच्चों को दें। बच्चे 'ओ' के उच्चारण से परिचित हो गए हैं। लोमड़ी, झोंपड़ी, घोड़ा जैसे शब्द दें और उनके उच्चारण व लेखन पर विशेष ध्यान दें। इन्हीं शब्दों का प्रयोग करते हुए कोई छोटी-सी कहानी भी सुनाई जा सकती है। जैसे- बूढ़ा जंगल में झोंपड़ी बनाकर रहता था–उसने एक घोड़ा पाल रखा था–घोड़े पर चढ़कर वह जंगल में सैर करने गया–रास्ते में उसने एक घायल लोमड़ी को देखा–उसका दिल पिघल गया–वह लोमड़ी को घर ले आया–उसने लोमड़ी की सेवा कर उसे जीवनदान दिया–तीनों मित्र बनकर रहने लगे।
पाठ में दिए गए अन्य शब्दों को अब कक्षा में दोहराएँ। 'ओ' की मात्रा के स्पष्ट उच्चारण को बार-बार दोहराएँ। दिए गए शब्दों को कॉपी में लिखवाएँ। पाठ का कक्षा में शुद्ध उच्चारणसहित वाचन करें। पाठ में आए 'ओ' की मात्रा वाले शब्दों को छाँटकर श्यामपट्ट पर लिखें, जैसे – सोमवार, दोपहर, खरगोश, उसको, ठोकर, कोमल आदि। पाठ में आए 'ओ' की मात्रा वाले सभी शब्दों को कॉपी में अलग से लिखवाएँ।

पाठ से संबंधित कुछ ऐसे प्रश्न करें जिनका उत्तर 'ओ' की मात्रा वाले शब्द हों। जैसे- कौन-सा दिन था? कौन ठोकर खाकर गिर पड़ा? कौन-कौन मोर देखने लगे? पूछे गए प्रश्नों के उत्तर श्यामपट्ट पर लिखें तथा बच्चों को बार-बार दोहराने को कहें।

औ की मात्रा (ौ)

'औ' की पहचान बच्चों को चित्र व उच्चारण के द्वारा करवाएँ। औरत, औषध, औलाद, औजार – इन शब्दों का परिचय चित्र द्वारा दें। शब्दों का उच्चारण करते समय 'औ' पर विशेष ज़ोर दें। इन शब्दों से संबंधित प्रश्न भी बच्चों से पूछें, जैसे – बीमार होने पर माँ क्या पिलाती है? तुम्हारे घर में कौन-कौन से औजार हैं? माँ-बाप अपनी संतान को क्या कहते हैं? बच्चे 'औ' के उच्चारण से परिचित हो गए हैं। 'पराग' में दिए गए चित्रों के साथ शब्दों से बच्चों को परिचित करवाएँ। 'औ' की मात्रा के स्पष्ट उच्चारण को बार-बार दोहराएँ। दिए गए सभी शब्दों को कॉपी में लिखवाएँ। कक्षा में सभी शब्दों का बार-बार उच्चारण करें। पाठ का कक्षा में आदर्श वाचन करें व बच्चों से भी करवाएँ।

अब तक बच्चे सभी मात्राएँ सीख चुके हैं। इनके उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। हिंदी भाषा में हम जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते भी हैं। अत: शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।

बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को जाँचने के लिए पाठ से संबंधित प्रश्न करें – विशेष रूप से ऐसे प्रश्न जिनका उत्तर 'औ' की मात्रा के शब्द हों। आज किसका जन्मदिन है? कौशल का। उसके पिता उसे क्या बनाना चाहते हैं? एक सौदागर। कौशल बड़ा होकर क्या बनना चाहता है? फ़ौजी।

बच्चों से यह भी जाना जा सकता है कि उनके पिता उन्हें क्या बनाना चाहते हैं और वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं। वे अपना जन्मदिन कैसे मनाते हैं? उनके जन्मदिन पर उनके घर कौन-कौन आता है? बच्चे स्वयं से जुड़े इन प्रश्नों के उत्तर बड़े चाव से देंगे।

इन शब्दों को पढ़कर और इनके बारे में अपने मित्र से बातचीत कीजिए –

शब्दों के माध्यम से बच्चों को 'ओ' तथा 'औ' के उच्चारण का अंतर स्पष्ट करें। दोनों के प्रयोग से शब्द के अर्थ में आने वाले अंतर को उदाहरण देकर समझाएँ, जैसे – खोला – बंद दरवाज़े को खोलना तथा खौला – उबलना, पानी खौलने लगा। गोरी – सफ़ेद रंग की चमड़ी को कहा जाता है लेकिन गौरी – लड़की का नाम है।

ऋ की मात्रा (ृ)

बच्चों को 'ऋ' की मात्रा का प्रयोग सिखाएँ। 'ऋ' की मात्रा का सही उच्चारण करते हुए शब्दों को कक्षा में पढ़ें व विद्यार्थियों को इसे दोहराने के लिए कहें। बच्चों को इसके अशुद्ध उच्चारण पर टोकें तथा शुद्ध उच्चारण करने का तरीका बताएँ। मृग, तृण, वृक्ष, कृपा जैसे सरल शब्दों से 'ऋ' की मात्रा का ज्ञान व उच्चारण शुरू करें। इसके बाद पाठ में दिए सभी शब्दों को कॉपी में लिखने को कहें।